

लेखक— वेदाङ्गों तथा दर्शनों के विद्वान् ब्रह्मचारी वेदव्रत मीमांसक

प्रकाशक— स्वामी सत्यपति परिव्राजक, ब्र० वेदव्रत मीमांसक
गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक, हरयाणा

© (सर्वाधिकार लेखकाधीन)

पत्राचार के लिए

□ ब्र० वेदव्रत मीमांसक—गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक, हरयाणा (भारत)

□ ब्र० वेदव्रत मीमांसक—श्री रामचन्द्र जी आर्य द्वारा

वैकटेश्वर बुक वायर्डिङ्ग वर्क्स,

६/६/६६२/ शंकरवीथी, नाला बाजार, सिकन्दराबाद, आन्ध्र प्रदेश

प्रथम संस्करण—विक्रमाब्द २०३३

मूल्य सोलह रुपये (भारत में) डाक व्यय पृथक्

भूमिका

१३ वर्ष पूर्व मैं अजमेर में मीमांसा दर्शन पढ़ता था। एक बार गुरुवर श्री पंडित युधिष्ठिर जी मीमांसक ने वार्तालाप के प्रसङ्ग में किसी सज्जन के समक्ष यह कहा था, “वेद तथा वैदिक ग्रन्थों में से केवल एक ज्यौतिष शास्त्र का मेरा अध्ययन नहीं हो सका।” इसको सुनकर ज्यौतिष पढ़ने की मेरी अभिलाषा तीव्र हुई। अध्ययन के पश्चात् मैं गुरुकुल सिंहपुरा में पढ़ाता था। ज्यौतिष की जिज्ञासा को पूर्ण करने के लिए मैंने आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वानों को सोत्तर पत्र लिखकर उनसे इस शास्त्र को पढ़ने के लिए परामर्श करने की चेष्टा की। विद्वानों ने जो पत्रोत्तर दिया उसका सारांश यह था कि, “आर्य जगत् में ज्यौतिष को जानने वाले कोई नहीं हैं। हमने भी नहीं पढ़ा। इस विषय में हम आपको कोई परामर्श नहीं दे सकते।” किसी विद्वान् ने यह भी लिखा था कि, “आप सूर्यसिद्धान्त पढ़ें।” महर्षि दयानन्द प्रदर्शित पाठविधि के अनुसार सूर्यसिद्धान्त पढ़ने की मेरी इच्छा थी। इसके पश्चात् मैंने ज्यौतिष पढ़ाने वाले गुरु का पता लगाकर उज्जैन जाकर श्री पं० पुरुषोत्तम जी जोषी से पढ़ना प्रारम्भ किया। उन्होंने मुझे सिद्धान्त शिरोमणि पढ़ाना प्रारम्भ किया। दूसरे ही दिन के पाठ में ज्यौतिष शास्त्र किस रूप में वेद का अङ्ग है इसका प्रतिपादक श्लोक समक्ष आया—

वेदास्तावद्यज्ञकर्मप्रवृत्ता यज्ञा प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण।
शास्त्रादस्मात् कालबोधो यतः स्याद्वेदाङ्गत्वं ज्यौतिषस्योक्तमस्मात् ॥

वेद यज्ञ कर्म में प्रवृत्त हैं (अर्थात् यज्ञ में पढ़ने के लिए वेदों का आविर्भाव हुआ) यज्ञ काल से सम्बद्ध हैं। इस शास्त्र से काल का बोध होता है। इसलिए यह शास्त्र वेद का अङ्ग है। इसको पढ़कर मन में आन्दोलन हुआ। १२ वर्षों से निरन्तर मैं गुरुकुल में यही पढ़ता और पढ़ाता रहा कि वेद सब विद्याओं का पुस्तक है। अब यह अन्वेषण प्रारम्भ हुआ कि ज्यौतिष क्या है और उसका वेद से क्या सम्बन्ध है। इसके परिणाम का एक भाग ही प्रस्तुत ग्रन्थ ज्यौतिषविवेक है।

ज्यौतिष को तीन भागों में बांटा जा सकता है। १—सिद्धान्त ज्यौतिष। इसमें सम्पूर्ण भूगोल और खगोल विद्या का वर्णन होता है। इसको जनसामान्य से लेकर विद्वानों तक सब पढ़ सकते हैं और समझ सकते हैं। २—सिद्धान्त-ज्यौतिष सगणित। इसमें प्रथम भाग में वर्णित सिद्धान्तों को गणित के द्वारा साक्षात् किया जाता है। इसको केवल गणित के विद्वान् ही जान सकते